॥ लिङ्गाष्टकम् ॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चित लिङ्गं
निर्मलभाषित शोभित लिङ्गम्।
जन्मज दुःख विनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ १ ॥

देवमुनिप्रवरार्चित लिङ्गं
कामदहं करुणाकर लिङ्गम्।
रावणदर्प विनाशन लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ २ ॥

सर्व सुगन्धिसुलेपित लिङ्गं
बुद्धिविवर्धन कारण लिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दित लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ ३ ॥

कनक महामणि भूषित लिङ्गं
फणिपतिवेष्टित शोभित लिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञ विनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ ४ ॥

देवगणार्चित सेवित लिङ्गं
भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकर लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ ५ ॥

कुङ्कुमचन्दनलेपित लिङ्गं
पङ्कज हार सुशोभित लिङ्गम्।
सञ्चितपाप विनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ ६ ॥

अष्टदलोपरिवेष्टित लिङ्गं
सर्वसमुद्भवकारण लिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ ७ ॥

सुरगुरुसुरवरपूजित लिङ्गं
सुरवनपुष्प सदार्चित लिङ्गम्।
परात्परं परमात्मक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम्॥ ८ ॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥